

(2) हिन्दी मासिक एक्सपर्ट टाइम्स

संपादकीय

भारत-चीन रिश्तों की नई दिशा

बीते दिनों बीजिंग में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच विशेष प्रतिनिधि स्तर की 25वें दौर की वार्ता संपन्न हुई। सीमा संबंधी मुद्दों पर केंद्रित इस बैठक को दोनों देशों के नाजुक द्विपक्षीय रिश्तों को साधने की दिशा में एक अहम और नया-तुला कदम कहा जा सकता है। दरअसल यह वार्ता अक्टूबर 2024 में एलएसी पर टकराव वाले बिंदुओं से सुरक्षा बलों की वापसी के समझौते और उसके उपरांत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच बनी सहमति की बुनियाद पर आगे बढ़ी है।हालिया वार्ता का वास्तविक महत्व सीमा संबंधी मुद्दे पर किसी बड़ी या अप्रत्याशित उपलब्धि में नहीं, अपितु ऐसे स्थायी तंत्र की स्थापना से जुड़े प्रयासों में निहित है, जिससे किसी भावी टकराव को टाला जा सके और द्विपक्षीय राजनीतिक एवं आर्थिक जुड़ाव को चरणबद्ध रूप से बहाल किया जा सके। इस संदर्भ में आठ-सूत्रीय संयुक्त सहमति ऐसे संकेत भी करती है कि दोनों देश महज तात्कालिक सैन्य तनाव के समाधान से आगे बढ़कर द्विपक्षीय संबंधों को कहीं व्यापक स्थिरता प्रदान करने वाले एक औपचारिक एवं दीर्घकालिक तंत्र के निर्माण की दिशा में अग्रसर होते दिख रहे हैं।इस बैठक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष संयुक्त विशेषज्ञ समूह और समन्वय एवं परामर्श के लिए कार्यकारी ढांचा यानी डब्ल्यूएमसीसी के तहत सीमा प्रबंधन कार्य समूह को सीमांकन एवं प्रबंधन के मोर्चे पर त्वरित एवं ठोस प्रगति का लक्ष्य सौंपना है। यह शब्दावली खासी अर्थपूर्ण है। यह इस वास्तविकता को रेखांकित करती है कि सीमा विवाद का पूर्ण समाधान अभी कठिन नहीं ही हो, लेकिन यह वार्ता उन क्रमिक समझौतों की कमी निम्न जरूर तैयार करती है, जिनसे सीमावर्ती इलाकों में अनिश्चितता और तनाव को घटाया जा सके। इस क्रम में दोनों सेनाओं के बीच सीधा संपर्क तंत्र भी उतना ही अहम है। वरिष्ठ सैन्य कमांडरों के बीच बातचीत के लिए दो नए बैठक स्थल बनाने और पूर्वी एवं मध्य सेक्टरों में दो नई हाटलाइंस स्थापित करने पर सहमति बनी है। असौभाग्यवश एलएसी के किसी भी ऐसे मोर्चे पर जहां किसी स्थानीय झड़प के बड़ा रूप लेने की आशंका हो, वहां ऐसा तंत्र उसे नरम करने में अहम भूमिका निभा सकता है।वर्ष 2005 के राजनीतिक मानदंडों और मार्गदर्शक सिद्धांतों वाले समझौते की पुष्टि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस दिशा में न्यायसंगत, तर्कसंगत और परस्पर स्वीकार्य समाधान के प्रति अपनी निष्ठा दोहराते हुए दोनों देशों ने सीमा संबंधी मुद्दे के अंतिम समाधान के राजनीतिक तंत्र को कायम रखा है। हालांकि इस मोर्चे पर किसी ठोस प्रगति के लिए अभी लंबा सफर तय करना बाकी है। बहरहाल वार्ता से यह भी स्पष्ट है कि भारत और चीन दोनों ही सीमा विवादों के साप को समय रिश्तों पर हावी रहने देने के नुकसान को संभवतः समझने लगे हैं। इस सिलसिले में कैलास मानसरोवर यात्रा की बहाली और चिह्नित दर्रों से सीमा व्यापार फिर से शुरू करने पर सहमति दरअसल लोगों के बीच संपर्क और व्यापारिक संबंधों को धीरे-धीरे पटरी पर लाने की तैयारी है। इसके साथ ही साझा नदियों पर विशेषज्ञ समूह की बैठक का निर्णय यह रेखांकित करता है कि दोनों पक्ष रणनीतिक असहमतियों के बीच भी उन मुद्दों पर संवाद बहाली के इच्छुक हैं, जहां परस्पर हित जुड़े हुए हैं।अब भारत 26वें दौर की वार्ता की मेजबानी करेगा, जिसमें इस सक्रियता के लिए संस्थागत आधार और मजबूत होने की उम्मीद है। चीन में हुई वार्ता के रुझान दर्शाते हैं कि किसी तात्कालिक संकट को टालने के बजाय स्थिरता और स्थायित्व पर कहीं अधिक जोर है। दोनों देशों का ‘प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि साझेदार’ होने पर बल देना तल्ल रणनीतिक शब्दावली को नरम करने और कूटनीतिक जुड़ाव का माहौल बनाने की ही जुगत अधिक लगती है। हालांकि अतीत को देखते ऐसे प्रयासों को द्विपक्षीय संबंधों के मूलभूत स्वरूप में किसी आमूलचूल परिवर्तन के तौर पर नहीं देखा जा सकता। फिर भी, कुछ बिंदुओं का उल्लेख महत्वपूर्ण है। जैसे दोनों सेनाओं के बीच नई संवाद व्यवस्था से स्थानीय झड़पों के बड़ा रूप लेने का जोखिम घटेगा।इसके लिए परस्पर विश्वास और नियमित संवाद आवश्यक होगा। त्वरित प्रगति का दृष्टिकोण जमीनी हकीकत को दर्शाता है कि सीमा विवाद का पूर्ण समाधान तुरंत संभव नहीं है, लिहाजा क्रमबद्ध समझौतों के माध्यम से ही टकराव घटाने और विश्वास कायम करने की उम्मीद की जा सकती है। वहीं, कैलास मानसरोवर यात्रा और सीमावर्ती व्यापार का धीरे-धीरे खुलना भी यह रेखांकित करता है कि दोनों देश रिश्तों को अलग-अलग खांचों में बांटकर आगे बढ़ने की रणनीति अपना रहे हैं, ताकि बड़े रणनीतिक विवादों के बावजूद चुनिंदा क्षेत्रों में सहयोग जारी रखा जा सके। भारत और चीन के बीच बनी इस सहमति का समय भी महत्वपूर्ण है, जो द्विपक्षीय स्तर कुछ कूटनीतिक स्थिरता प्रदान करता है। खासतौर से तब, जब दोनों देश शंघाई सहयोग संगठन यानी एससीओ और ब्रिक्स जैसे मंचों पर सक्रियता बढ़ा रहे हैं।इस सबके बावजूद हालिया वार्ता को एक बड़ा रणनीतिक बदलाव मानने के बजाय तनाव को घटाने की कायद भर समझा जाना चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि दोनों देशों के बीच अविश्वास की जड़ें काफी गहरी हैं। एलएसी पर इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण, विमाली सीमा पर सैन्य शक्ति का संतुलन, गहराता व्यापार घाटा और क्षेत्रीय दबदबे की होड़ जैसे पहलू भविष्य में भी भारतीय नीति की दिशा को निर्धारित करेंगे। स्पष्ट है कि भारत कूटनीतिक उम्मीदों के फेर में पड़कर अपनी रणनीतिक चौकसी और तैयारियों में कोई ढिलाई नहीं बरतेगा। कुल मिलाकर, 25वें दौर की इस वार्ता का मर्म यही है कि भारत और चीन के रिश्ते 2020 से पहले वाली स्थिति में वापस नहीं जा रहे, बल्कि अब नियत होड़ के नए दौर में दाखिल हो चुके हैं। इसका उद्देश्य दोनों देशों की बुनियादी सामरिक प्रतिस्पर्धा की रेखा को एकाएक मिटाना नहीं, बल्कि एक तरह से उसे धुंधला कर किसी नए सैन्य टकराव में तब्दील होने से रोकना है।

सम्पादकीय

अंतरिक्ष जैसे अहम सेक्टर में निजीकरण पर विवाद

राजेश पांडेय

भारतीय औद्यव्यवस्था के कई क्षेत्र तेजी से निजीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में लंबे समय तक प्राइवेट सेक्टर की भूमिका सीमित रही लेकिन अब इन्हें भी धीरे-धीरे खोला जा रहा है। इनमें अंतरिक्ष कार्यक्रम शामिल है। इस पर विवाद और सवाल उठने लगे हैं। जुलाई-अगस्त के माह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) से बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों के इस्तीफे और एक निजी कंपनी के अंतरिक्ष अभियान के लिए चर्चित रहे हैं। 23 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरिक्ष दिवस पर इसरो की तारीफ करते हुए कहा कि इसरो की सफलता से कई बच्चे साइंटिस्ट बनने के बारे में सोचेंगे। मोदी ने यह भी कहा, भारत की निजी अंतरिक्ष प्रतिभा दुनिया में अपनी पहचान बना रही है। लेकिन, उसी दिन इसरो के पूर्व प्रमुख माधवन नायर ने स्पेस सेक्टर के बहुत ज्यादा निजीकरण के खिलाफ आगाह किया। माधवन नायर की आपत्ति कई कारणों से ध्यान खींचती है। उन्होंने अक्टूबर 2018 में गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की थी। शायद उनसे पहले कोई जाना-माना स्पेस साइंटिस्ट भाजपा में नहीं आया था। उनका करिअर कामयाबी और शोहरत की ऊंची उड़ान से विवादों की गहराई में गोता लगाने की कहानी है। वे 2003-04 से छह साल तक इसरो के प्रमुख थे। इस दौरान देश के पहले चंद्र मिशन चंद्रयान-1 सहित 27 अभियान सफल हुए। उन्हें 2009 में मनमोहन सिंह की यूपीए सरकार ने देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्मविभूषण से अलंकृत किया था। लेकिन 2012 में सरकार ने टेलीकॉम स्पेक्ट्रम से संबंधित एंट्रिक्स-देवास करार में कथित घोटाले के आरोप में किसी भी सरकारी संगठन में नायर की नियुक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया। यह यावदी लागू है। नायर ने निजी कंपनियों को प्रक्षेपण केंद्रों का काम सौंपने के प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया है। वे पहले भी इसरो की कमजोरियों को सामने रख चुके हैं। जब संगठन से तीन वर्षों में कई वैज्ञानिकों ने इस्तीफा दे दिया था तब

2017 में उन्होंने नए प्रोजेक्ट, इनोवेशन और किसी भावी परिकल्पना के अभाव को इसका कारण बताया



था। इस स्थिति में सुधार नहीं हुआ है। इसरो लंबे समय से सरकार की उपेक्षा, वैज्ञानिकों के लिए अवसरों की कमी और जरूरी प्रोत्साहन जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है। पिछले दो दशक से अच्छे वैज्ञानिकों का पलायन जारी है। वहां से 2004 में 105 और 2005 में 100 वैज्ञानिकों ने काम छोड़ा था। 2006-07 में 354 नई नियुक्तियां हुईं तो 187 वैज्ञानिक विदा हो गए। 2012 से 2024 के बीच 700 वैज्ञानिकों और अन्य कर्मचारियों ने इसरो छोड़ दिया। पलायन का सिलसिला 2026 में जारी है। अंतरिक्ष विभाग में 2025-26 के अंत में हर दस स्वीकृत पदों में लगभग तीन पद खाली थे। रस्टाफ की कमी 76 फीसदी तक पहुंच गई थी। यह 25 साल में सबसे अधिक है। जुलाई में यूआर राव सैटेलाइट सेंटर से 80 और विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर से 20 साइंटिस्ट और टेक्नीशियन निकल गए। इनमें से कुछ प्रतिष्ठागत गगनयान मिशन में काम कर रहे थे। अधिकतर लोगों को बेहतर वेतन और सुविधाएं प्राइवेट सेक्टर में आकर्षित करती हैं। फिर भी, इसरो जैसे आला दर्जे के सरकारी संगठन को उसके हाल नहीं छोड़ा जा सकता है। निजीकरण को बढ़ावा देने के लिए अक्सर अच्छे सरकारी संगठनों की नाकामियों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है। इसरो के कुछ अभियान विफल हुए हैं। माधवन का

अंतरिक्ष मिशन- गगनयान जैसे अहम प्रोजेक्ट से वैज्ञानिकों और तकनीशियनों का पलायन होने के बाद जुलाई में इसरो ने कहा कि अब ऐसे मामले अंतरिक्ष नियंत्रण के लिए अंतरिक्ष विभाग को भेजे जाएं। इसरो जैसे संगठन की स्थिति निजीकरण की प्रक्रिया पर नए सिरे से गौर करने की जरूरत बताती है। यों भी सैटेलाइट प्रक्षेपण के लिए जरूरी बुनियादी ढांचे की लागत बहुत ज्यादा है। हजारों करोड़ रुपए की भारी पूंजी लगाने पर उसके हिसाब से रिटर्न नहीं मिलता है। प्राइवेट कंपनियों को सैटेलाइट लॉन्च के लिए सरकारी केंद्रों पर निर्भर रहना पड़ेगा। 18 जुलाई को स्काईरूट एयरोस्पेस कंपनी का विक्रम-1 सैटेलाइट सरकार के सतीश धवन स्पेस सेंटर, श्रीहरिकोटा से लॉन्च किया गया। यह धरती की निचली कक्षा में पहुंचने वाला भारत का पहला प्राइवेट रॉकेट है। अंतरिक्ष कार्यक्रमों को निजी क्षेत्र के लिए खोलने के बाद सरकार के अंतरिक्ष विभाग के बजट में मामूली बढ़ोतरी होती रही है। जबकि निजी क्षेत्र से आने वाली चुनौतियों को देखते हुए बजट में भारी बढ़ोतरी की जरूरत है। 2019-20 में अंतरिक्ष विभाग का बजट 12743 करोड़ रुपए था। इसमें बाद के वर्षों में दो-तीन प्रतिशत का उतार-चढ़ाव आया है। 2020-21 में बजट 13479 करोड़ रुपए, 21-22 में 13949 करोड़ रुपए 22-23 में 13700 करोड़ रुपए, 23-24 में 12543 करोड़ रुपए, 24-25 में 13042 करोड़ रुपए तो 2025-26 में बजट 13416 करोड़ रुपए रहा। जाहिर है, इसका बड़ा हिस्सा कर्मचारियों के वेतन और रोजमर्रा के खर्चों में खपता है। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की बुनियाद दुनिया के बड़े देशों से साइंस, टेक्नालॉजी में होड़ और स्पेस टेक्नालॉजी के फायदे आम लोगों को मुहैया कराने के मकसद से रखी गई है। 1962 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय कमेटी का गठन किया था। इसका नतीजा जल्द सामने आया और नवंबर 1963 में भारत ने थुम्बा प्रक्षेपण केंद्र से पहला रॉकेट लॉन्च किया था। उस राकेट को लांच पैड तक साइकिल से ले जाया गया था। 15 अगस्त 1969 को इंदिरा गांधी के शासनकाल में इसरो ने आकार लिया। और भारत कुछ वर्षों के अंदर दुनिया की बड़ी

अंतरिक्ष ताकत बन गया।

इसरो की रिसर्च के बूते भारत ने अपने मिसाइल कार्यक्रम को नई दिशा दी है। वह हजारों किलोमीटर दूर तक मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल बना रहा है। स्पेस साइंस में अग्रणी पांच-छह देशों में भारत की हमेशा गिनती होती है। फिर भी, हाल के वर्षों में अफसरशाही के मजबूत नियंत्रण और लापरवाही ने इसरो को कमजोर किया है। उसके कई अहम मिशन असफल हुए हैं। गगनयान जी-1 की टेस्ट फ्लाइट, जीएसएलवी-एफ 17 और पीएसएलवी एन 1 जैसे कुछ मिशन अपने निर्धारित समय से पीछे रहे हैं। इस साल प्रमुख प्रक्षेपण यान पीएसएलवी के दो मिशन में देर होने से लॉन्च की गतिविधियों पर असर पड़ा है। मीडिया में छपी खबरों के अनुसार इसरो में अधिकतर फैंसले शीर्ष स्तर से होने लगे हैं। प्रमुख टेक्निकल और प्रशासनिक निर्णय चैयरमैन के दफ्तर से होते हैं। इसका वैज्ञानिकों के मनोबल पर प्रभाव पड़ता है। कह सकते हैं कि 14 हजार से अधिक कर्मचारियों की संख्या के इसरो को किसी एक साल में सौ से अधिक वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और प्रशासनिक अधिकारियों के आने-जाने से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता है। लेकिन, 60 साल से अधिक पुराने संगठन के मजबूत आधार और कार्य संस्कृति की तुलना कुछ साल पहले बने निजी संगठनों से कैसे कर सकते हैं। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में विक्रम साराभाई, यूआर राव, सतीश धवन, स्वर्गीय राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जैसे विश्वविख्यात साइंटिस्ट की बड़ी भूमिका रही है। उनके उदाहरण साइंस, रिसर्च जैसे क्षेत्रों में दिलचस्पी लेने वाले युवाओं को प्रेरित करते हैं। इसरो को देखकर ही प्राइवेट सेक्टर ने अंतरिक्ष में ऊंची उड़ान भरी है। इसलिए इसरो को सरकारी संरक्षण की जरूरत है। उसकी मजबूती ने विश्व में भारत की ताकत, रुतबा और दबदबा बढ़ाया है। स्पेस साइंस सिर्फ चांद, मंगल ग्रहों जैसी सुदूर दुनिया की हकीकत को धरती पर नहीं उतारती है बल्कि वह खेती, मौसम, डिफेंस, दूरसंचार सहित कई क्षेत्रों में तरक्की और संभावनाओं के नए दरवाजे खोलती है।

देशभक्ति के बाद अब हिन्दू होने का भी सर्टिफिकेट

शकील अख्तर

राहुल की बातों और मोहन भागवत की बातों में यही फर्क है। राहुल जो कहते हैं करने के लिए और मोहन भागवत से लेकर प्रधानमंत्री मोदी तक जो कहते हैं वह सामने वाले को बेवकूफ बनाने के लिए। और सामने उनके अपने ही लोग होते हैं उन्हें ही मूर्ख बनाने की कोशिश करते हैं। समस्या यह है कि उनकी पूरी ट्रेनिंग ही नकारात्मक विचारों के बीच हुई है। यह मानकर कि कु छ भी कहा जा सकता है और किया, उसका ठीक उल्टा भी जा सकता है। भागवत जी अमेरिका में हिन्दुओं पर ही सवाल उठा रहे हैं। उन्हीं हिन्दुओं और जिनके लिए सौ साल पहले उनका संगठन बना था और आज भी वह नहीं कहता कि यह भारतीयों का संगठन है, वही कहता है कि हिन्दुओं का संगठन। यहां न्यूयार्क में वे कहते हैं कि जो हिन्दू यहां समझता है कि मुसलमन भारत में कि नहीं रह सकते वह हिन्दू नहीं है। वाह! हालांकि यह बयान बहुत विरोधाभासी है और संघ के लिए इस तरह की बातें करना कोई नई चीज नहीं है मगर फिर भी इसकी छुपी हुई परतें खोलना होगा। क्योंकि भाजपा संघ इसके सहारे आपने को उदार बताने की कोशिश करेगा और

मुख्य मुद्दा बन ही नहीं सकता। और उसने शुरु कर दिया है। तो नंबर एक यह बयान राहुल के छात्र- युवा, महिला, दलित, ओबीसी के मुद्दों से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए दिया गया है। और अपने एवं भाजपा के प्रिय विषय हिन्दू-मुसलमान पर फिर से बहस को लाने के लिए। हिन्दू-मुसलमान ही इनकी प्राण वायु है। वह कम होते ही यह छटपटाने लगते हैं।राहुल ने देश की राजनीति से हिन्दू मुसलमान के सवाल को हटाकर शिक्षा, स्कूल, नौकरी, गरीबी, महंगाई जैसे असली सवालों का ला खड़ा किया है। इसकी कोई काट मोदी प्राण और वे नहीं हैं। इसलिए भागवत उनकी मदद के लिए आए हैं। और हिन्दू-मुसलमान को नए रंग में लाकर कोशिश कर रहे हैं कि देश में अजोड़ फिर इसी मुद्दे पर सेट हो जाए। लेकिन वे राहुल के नहीं जानते। यह समय उनका आ गया है। और वे बहुत साफ कहते हैं कि नहीं रह सकते वह हिन्दू नहीं है। वाह! हालांकि यह बयान बहुत विरोधाभासी है और संघ के लिए इस तरह की बातें करना कोई नई चीज नहीं है मगर फिर भी इसकी छुपी हुई परतें खोलना होगा। क्योंकि भाजपा संघ इसके सहारे आपने को उदार बताने की कोशिश करेगा और

बाद दुनिया के लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए। मगर विचार बदले बिना चोला बदलने से कुछ नहीं होगा। आज के जमाने में जब जानकारियां सबके पास हों तो आपका कहो कुछ करो कुछ नहीं चल सकता। संघ और भाजपा अपनी सबसे बड़ी ताकत अपने कई चेहरे ही समझते थे। मगर जब तक आपको कुछ काम करने का मौका न मिले तब तक तो वहां उनकी विभाजनकारी नीतियों का बहुत विरोध हो रहा है। लोग फ्लेकार्ड लेकर सड़कों पर उतरे हैं। न्यूयार्क के मेयर जोहरान ममदानी ने कहा कि मेरे पास अधिकार नहीं हैं वरना मैं किसी विभाजनकारी विचारधारा को यहां फैंलाने की इजाजत नहीं देता। न्यूयार्क बहुलतावादी विचारों का शहर है। और संघ के विचार इसके ठीक उलट हैं। उनके अलावा मानवाधिकार संगठनों ने साफ कहा कि संघ की विचारधारा असहिष्णुता और भेदभाव को बढ़ावा देती है। और वहां खासतौर से क्रिश्चयन की बात ज्यादा हुई कहा कि उनके और मुस्लिम के खिलाफ नफरत फैलता है। 2014 में मोदी सरकार आने के बाद सबसे पहले चर्च जलाने, उन्हें तोड़ने की हो गी गिराजर सिंह का जो सबको अपनी सफाई देना जरूरी था। भारत के

सबको नई दिशा दी है। मगर ऐसा करने में भाजपा की सरकार ने जो सोच रहे हो तो वहां उनकी विभाजनकारी नीतियों का बहुत विरोध हो रहा है। लोग फ्लेकार्ड लेकर सड़कों पर उतरे हैं। न्यूयार्क के मेयर जोहरान ममदानी ने कहा कि मेरे पास अधिकार नहीं हैं वरना मैं किसी विभाजनकारी विचारधारा को यहां फैंलाने की इजाजत नहीं देता। न्यूयार्क बहुलतावादी विचारों का शहर है। और संघ के विचार इसके ठीक उलट हैं। उनके अलावा मानवाधिकार संगठनों ने साफ कहा कि संघ की विचारधारा असहिष्णुता और भेदभाव को बढ़ावा देती है। और वहां खासतौर से क्रिश्चयन की बात ज्यादा हुई कहा कि उनके और मुस्लिम के खिलाफ नफरत फैलता है। 2014 में मोदी सरकार आने के बाद सबसे पहले चर्च जलाने, उन्हें तोड़ने की हो गी गिराजर सिंह का जो सबको अपनी सफाई देना जरूरी था। भारत के

हिंदुओं और हिंदुत्व पर नयी चालाकी

देश में पिछले सौ सालों से हिंदू-मुसलमान का भेदभाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने बढ़ाया। लेकिन अब संघ प्रमुख मोहन भागवत ने अमेरिका में कहा है कि श्रमगर कोई हिंदू सोचता है कि भारत में मुसलमान नहीं होने चाहिए, तो वह हिंदू नहीं रहेगाशु। भागवत ने कहा कि हिंदू होने का अर्थ है यह मानना कि सभी धर्म अंतरक्ष एक ही परम सत्य या ईश्वर तक पहुंचने के अलग-अलग रास्ते हैं और हर ईंसान समान सम्मान का अधिकारी है। इसके अलावा भागवत ने मानवता, विविधता में एकता और लोकतंत्र आदि पर भी उदार विचार पेश करने की कोशिश की। शायद संघ प्रमुख को खुशफहमी हो कि उन्होंने विवेकानंद की तरह कोई बड़ा संदेश दुनिया को दिया है। लेकिन देश की जो हकीकत है, उसके बाद संघ प्रमुख मोहन भागवत की बातों पर दूसरों को छोड़िए, खुद कट्टर हिंदुत्व की बात करने वालों को भी यकीन नहीं आया। संघ की सोच को आगे बढ़ाने के लिए ही भाजपा जैसा राजनैतिक दल बना, जिसे मुसलमानों से नफरत का परिचायक देते हुए बाबरनी मस्जिद को तोड़ा। उसी जमीन पर राम मंदिर बनाने के लिए

हुए एकआईआर दर्ज करने की मांग करते हैं, तो भाजपा नेता शुद्धिकरण को सही ठहराते हैं। आठ अपराष्ट को मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ यह अपराध हुआ था, आज तक उस पर तो नरेन्द्र मोदी या मोहन भागवत ने अफसोस नहीं जताया और अब मानवता का उपदेश दे रहे हैं। लेकिन इसमें भी एक चालाकी छिपी है। मोहन भागवत यह बता रहे हैं कि वह हिंदू नहीं हैं जो भारत में मुसलमान के रहने का हक नहीं मानता। असल में उन्हें कहना चाहिए था ऐसा ईंसान देशभक्त नहीं है। क्योंकि मुसलमान या किसी भी धर्म के लोग भारत में रहे, भारत के नागरिक रहें, यह हक केवल और केवल संविधान दे सकता है। इसमें धर्म या जाति के का कोई लेना-देना ही नहीं है। दरअसल यहां भागवत ने गोलवलकर और सावरकर जैसी चालाकी दिखाई है।

उन्होंने एक ही देश के नागरिकों के लिए बराबरी के दर्जे की बात नहीं की। यही हिंदुत्व विचारधारा है, जो शुमुस्लिम-मुक्त भारतशु की बात खुलकर नहीं करती, बल्कि ऐसे भारत की बात की करती है, जहां मुसलमान हिंदुओं की कमी से रह सकते हैं, और उन्हें बार-बार यह याद दिलाया जाता है कि वो

दूसरे दर्जे के नागरिक हैं। यह बात समाज के बड़े तबके में अनायास ही फैाई जा चुकी है। इसलिए कई बार फिल्मों या धारावाहिकों में मुसलमान सैनिक या पुलिस वाले की देशभक्ति अलग से चित्रित की जाती है, जबकि हिंदू फिरदार के साथ ऐसा करने की जरूरत नहीं पड़ती। बाकी क्षेत्रों में भी यह भेदभाव नाजुर और भेदभाव को बढ़ावा देती उसकी देशभक्ति का सर्टिफिकेट तरह-तरह से मांगा जाता है. हिंदुओं के साथ ऐसा नहीं हो ता, न ही बौद्ध, सिख या जैन अल्पसंख्यकों के साथ। इसलिए मोहन भागवत की बातों को बड़ी बारीकी से विश्लेषित करने की जरूरत है। क्योंकि उनका संगठन ही लगातार मुसलमानों के खिलाफ खुले भेदभाव और हिंसा को बढ़ावा देता आया है। संघ की इस राजनीति की पोल खोलने पर भाजपा बेचैन हो जाती है और अपने राजनैतिक विरोधियों को नागरिकों के रूप में देखने के बजाय उन्हें अर्बन नक्सल, श्रृकड़े-टुकड़े गैंगश या राष्ट्रविरोधी ताकतों के रूप में पेश किया जाता है। यह खतरनाक खेल मोदी शुरु से करते आए हैं। इस बार उन्होंने एक नया शब्द इसमें जोड़ दिया

अपनी काबिलियत साबित करने के लिए दीपक म्हरके रोजाना नए-नए वीडियो पोस्ट कर रहे हैं, लगभग सभी में दिमागी नक्सल शब्द केंद्र में होता है। मोदी विरोधी लोगों को दिमागी नक्सल बताकर उन पर बंदूकें चलाना, मारपीट करना और पूरी तरह सफाया करने जैसे वीडियो भाजपा आईटी सेल की तरफ से रोज आ रहे हैं। इन वीडियोज में फिल्मों और वेब सीरीज की जिन क्लिप्स का इस्तेमाल किया है, उनमें किसी में बड़े पैमाने पर गोलीबारी हो रही है, किसी में खलनायक बेरहमी से मारपीट करते दिख रहे हैं। साफ है कि भाजपा सभी आंदोलनकारियों और विरोधियों को दिमागी नक्सल के रूप में चिह्नित कर रही है और उनसे हिंसा ने निपटने की बात कर रही है।

आज का राशिफल

मेघ- काफी दिनों से अवरोधित कोई हल होने के आसार बनेंगे। जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता अपेक्षित है। शिक्षा प्रतियोगिता की दिशा में किया गया प्रयत्न सार्थक होगा। रोजगार में लाभकारी अवसर मिलेंगे।

बृषभ- भातुकता व्यावहारिक जगत के अनुकूल चलने में बाधक होगी। अतः व्यवहार कुशल बने। भविष्य संबंधी कुछ चिंताएं मन पर प्रभावी होंगी। विद्यार्थी शिक्षा में लापरवाही न बरतें। घर में खुशहाल वातावरण रहेगा।

मिथुन- मूल्यवान समय को व्यर्थ के कायरे में जाया न करें। नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी। सकारात्मक सोच को अपनाते हुए जीवन को सही दिशा की ओर केंद्रित करें और परिवार के अनुकूल चलें।

कर्क- नये व्यासायिक संबंध प्रगाढ़ होंगे। संवेदनाशील शरीर यहां की प्रतिक्रिया से बीमार पड़ सकता है। महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति में असमर्थता जैसी स्थिति मन को निराश करेगी। पुरानी घटनाओं से मन को कष्ट संभव।

सिंह- नयी घरेलू जिम्मेदारियों के पैदा होने से व्यय संभव। अच्छे कायरे से परिजनों के दिल में जगह बनायें। योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। महत्वपूर्ण कायरे में लापरवाही कई न करें।

कन्या- जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। नये कायरे के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। नये क्षेत्रों में प्रयास से लाभ संभव। व्यावसायिक यात्रा द्वारा लाभ होगा। संबंधियों के सहयोग से कठिनाइयां दूर होंगी।

तुला- भविष्य को लेकर मन नकारात्मक आशंकाओं से प्रभावित रहेगा। प्रतिभाओं के बावजूद भी हीन भाव प्रतिभाओं के लाभ से वंचित करेगा। सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी। रोजगार में व्यस्तता रहेगी।

वृश्चिक- रोजगार संबंधी कुछ नयी योजनाओं पर मन केंद्रित होगा। किसी कार्य में सफलता से उत्साह में वृद्धि होगी। कल्पनाओं में जीना छोड़ भौतिक जगत के अनुकूल चलने का प्रयत्न करें। भौतिक सुख में वृद्धि होगी।

धनु- अपनी बातूनी कला का लाभ उठाएंगे। महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति में असमर्थता जैसी स्थिति मन को निराश करेगी। परिश्रम से आर्थिक लाभ का योग है। समस्याओं के समाधान से उत्साह में वृद्धि होगी।

मकर- बीती बातों को सोचने के बजाय वर्तमान में जीने की चेष्टा करें। जरूरत से ज्यादा बोलना व्यक्तित्व पर कुप्रभावी होगा। अतर्क इसे सुधारें। नीरस स्वभाववश रचनात्मक योजनाओं को सार्थक करने में असमर्थ होंगे।

कुंभ- सब कुछ सामान्य होते हुए भी मन अरुचि का शिकार होगा। थोड़ा संयमी व धैर्यवान बने। भाग्य से प्राप्त सभी स्थितियों के मध्य समझौतावादी रवैया अपनावें। कुछ नई व्यस्तताएं सामने आएंगी। आलस्य कई न करें।

मीन- कुछ व्यासायिक कारणों से घर से दूर रहना पड़ सकता है। परिजनों की सुख-सुविधा के प्रति मन चिंतित होगा। मस्त-मौला मन व्यर्थ के कायरे में समय जाया कर महत्वपूर्ण कार्य के प्रति लापरवाह के प्रति मन चिंतित होगा।

2 करोड़ में बनी हनुमान अंश ने कमाए 42 करोड़



इन दिनों तीन बड़ी फिल्ममें आवारापन 2, टॉक्सिक और बंटवारा 1947 सिनेमाघरों में हैं। तीनों ही फिल्मों में बड़ी स्टारकास्ट है, किसी में सनी देओल, किसी में केजीएफ स्टार यश और एक में इमरान हाशमी। बॉक्स ऑफिस क्लेश में आवारापन 2 और टॉक्सिक आगे निकल गई और बंटवारा 1947 पीछे रह गई। इसी बीच एक लड़की का सिनेमाघरों में खड़े रोते हुए वीडियो वायरल हो गया। हर किसी ने माना की लड़की इन तीनों में से कोई एक फिल्म की टिकट न मिलने से भावुक हो गई। लेकिन पूछे जाने पर उसने कहा- मैं फिल्म हनुमान अंश देखने आई थी, लेकिन टिकट नहीं मिले। हैरानी की बात है कि जहां टॉक्सिक जैसी 500-1000 करोड़ में बनी फिल्मों के सिनेमाघर खाली पड़े हैं, वहां महज 2 करोड़ में बनी हनुमान अंश हाउसफुल कैसे हुई। इस फिल्म के हीरो का न तो इससे पहले किसी ने नाम सुना और न ही डायरेक्टर का। फिल्म का न तो भव्य प्रमोशन किया गया और न ही इसके फस्ट लुक, टीजर और ट्रेलर की कोई खबर थी। इन्हें फिल्म के ही सोशल मीडिया हैंडल से पोस्ट किया गया। नीम करौली बाबा पर बनी ये फिल्म शुरुआती 2 हफ्तों तक कोई कमाई नहीं कर सकी, लेकिन चौथे हफ्ते कुछ ऐसा हुआ कि टॉक्सिक जैसी बड़ी फिल्म से क्लेश के बावजूद इसने 800 प्रतिशत मुनाफा कमाते हुए 42 करोड़ का कलेक्शन कर लिया। बड़ी-बड़ी फिल्में हटकर अब इसे स्क्रीन्स दी जा रही हैं। टिकट बुकिंग प्लेटफॉर्म पर भी इसकी बुकिंग ज्यादा है।

कम बजट की इस फिल्म की सक्सेस से कई बड़े सवाल खड़े होते हैं।

पहला सवाल- आखिर फिल्म ने बिना प्रमोशन ऐसी कमाई कैसे की?

दूसरा सवाल- फिल्म दर्शकों को इतना पसंद क्यों आ रही है?

तीसरा सवाल- बड़ी फिल्मों से

टक्कर के बावजूद इसे स्क्रीन्स कैसे मिलीं?

जानिए इन तीन बड़े सवालों के जवाब ट्रेड एक्सपर्ट से, साथ ही जानिए कैसे 50 साल पहले शोले से क्लेश के बावजूद कैसे जय संतोषी मां ने बनाया इतिहास- 50 साल पहले जय संतोषी मां के साथ भी ऐसा ही हुआ था, शोले से थी टक्कर आज से 50 साल पहले 15 अगस्त 1975 को अमिताभ बच्चन-धर्मेन्द्र की फिल्म शोले रिलीज हुई। बड़े बजट, बड़ी स्टारकास्टिंग और बड़े डायरेक्टर रमेश सिप्पी की इस फिल्म पर हर किसी की नजरें थीं। कोई बड़ा फिल्ममेकर इस फिल्म के आपस अपनी फिल्में रिलीज नहीं करना चाहता था। लेकिन इस फिल्म के साथ ही 25 लाख में बनी धार्मिक फिल्म जय संतोषी मां रिलीज की गई। फिल्म में कोई टॉप एक्टर नहीं था, इसके बावजूद फिल्म ऐसी चली कि इसने 5 करोड़ रुपए का ऐतिहासिक बॉक्स ऑफिस कलेक्शन किया। जहां-जहां फिल्म 'जय संतोषी मां' रिलीज हुई, वहां-वहां 'शोले' की कमाई पर असर पड़ा। लोग चप्पल उतारकर सिनेमाघरों में जाते और स्क्रीन की आरती उतारते थे। जल्द ही ये हिंदी सिनेमा की सबसे कामयाब अध्यात्मिक फिल्मों में शामिल हो गई। इसके गाने, मैं तो आरती उतारूं रे संतोषी माता की और जय संतोषी मां आज भी सुने जाते हैं।

सवाल-1: कैसे छोटे बजट की फिल्म ने कमाए 42 करोड़ रुपए?

ट्रेड एक्सपर्ट तरण आदर्श ने फिल्म की कमाई पर कहा- 'अगर आप कलेक्शन देखेंगे तो पहले दिन से लेकर अब तक, खासकर थर्ड वीक और चौथे वीकेंड में वो ऐतिहासिक है। ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।' 'कंटेंट तो है ही, लेकिन 'वर्ड ऑफ माउथ' से फिल्म को फायदा मिला। अगर नेगेटिव पब्लिसिटी होती है, तो दूसरे-तीसरे दिन फिल्म पर असर दिखता है, लेकिन अगर रिव्यू

पॉजिटिव हैं, तो फिल्म चल जाती है। यही हनुमान अंश के साथ हुआ। दूसरे वीक में ये फिल्म उतरने वाली थी। सिर्फ 40 लाख का कलेक्शन था। पहले हफ्ते भी कुछ खास कलेक्शन नहीं था।'

सवाल-2: बड़ी फिल्मों से क्लेश के बावजूद हनुमान अंश की स्क्रीन्स कैसे मिलीं?

7 अगस्त को जब फिल्म हनुमान अंश रिलीज हुई, तो इसे चुनिंदा स्क्रीन्स मिलीं। 14 अगस्त को आवारापन 2 और बंटवारा 1947 आने से फिल्म की स्क्रीन्स और कम हो गई। फिल्म की कमाई भी खास नहीं हो रही थी, तो इसे सिनेमाघरों से हटाया जाने लगा। लेकिन फिल्म फिल्ममेकर इस फिल्म के आपस अपनी फिल्में रिलीज नहीं करना चाहता था। लेकिन इस फिल्म के साथ ही 25 लाख में बनी धार्मिक फिल्म जय संतोषी मां रिलीज की गई। फिल्म में कोई टॉप एक्टर नहीं था, इसके बावजूद फिल्म ऐसी चली कि इसने 5 करोड़ रुपए का ऐतिहासिक बॉक्स ऑफिस कलेक्शन किया। जहां-जहां फिल्म 'जय संतोषी मां' रिलीज हुई, वहां-वहां 'शोले' की कमाई पर असर पड़ा। लोग चप्पल उतारकर सिनेमाघरों में जाते और स्क्रीन की आरती उतारते थे। जल्द ही ये हिंदी सिनेमा की सबसे कामयाब अध्यात्मिक फिल्मों में शामिल हो गई। इसके गाने, मैं तो आरती उतारूं रे संतोषी माता की और जय संतोषी मां आज भी सुने जाते हैं।

सवाल-1: कैसे छोटे बजट की फिल्म ने कमाए 42 करोड़ रुपए?

ट्रेड एक्सपर्ट तरण आदर्श ने फिल्म की कमाई पर कहा- 'अगर आप कलेक्शन देखेंगे तो पहले दिन से लेकर अब तक, खासकर थर्ड वीक और चौथे वीकेंड में वो ऐतिहासिक है। ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।' 'कंटेंट तो है ही, लेकिन 'वर्ड ऑफ माउथ' से फिल्म को फायदा मिला। अगर नेगेटिव पब्लिसिटी होती है, तो दूसरे-तीसरे दिन फिल्म पर असर दिखता है, लेकिन अगर रिव्यू

हैं।

डायरेक्टर- विशाल चतुर्वेदी

फिल्म हनुमान अंश को 42 साल के विशाल चतुर्वेदी ने बनाया है। ये उनके करियर की सबसे बड़ी फिल्म है। फिल्मों में करियर शुरू करने से पहले विशाल एक डॉक्टर थे। ये उनके निर्देशन की दूसरी फिल्म है, इससे पहले उन्होंने 2012 की वॉनिंग डायरेक्ट की थी। वह टीवी सीरीज और फिल्मों के डायलॉग राइटर के तौर पर काम कर चुके हैं।

एक्टर- शोभिनव सत्या

एक्टर शोभिनव सत्या ने हनुमान अंश में नीम करौली बाबा का किरदार निभाया है। उन्होंने F'III, पुणे से पढ़ाई की है। एक्टिंग के साथ वह असिस्टेंट डायरेक्टर, सेकंड यूनिट डायरेक्टर, स्क्रीप्ट और कंटिन्यूटी विभाग में काम कर चुके हैं। उन्होंने 'महापौर', 'CID', 'रगिनी एमएमएस' और 'हैप्पीली एवर आफ्टर' जैसे प्रोजेक्ट्स में काम किया है।

एक्टर- चंदन के.आनंद

चंदन आनंद ने फिल्म में लीड रोल निभाया है। इससे पहले वो कई फिल्मों और टीवी शोज में साइड रोल कर चुके हैं। वह आलू चाट, पार्च, लव आज कल, गुंजन सक्सेना, फाइटर, होमवार्ड जैसी फिल्मों के अलावा टीवी शो बैरिस्टर बाबू, ये प्यार न होगा कम, मोत जैसे दर्जनों शोज कर चुके हैं।

सवाल-3: क्यों पसंद की जा रही है हनुमान अंश?

फिल्म की कामयाबी में सोशल मीडिया का अहम रोल: फिल्म से जुड़े वीडियो लगातार सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। फिल्म के कई सीन, नीम करौली बाबा के असल वीडियो से हुबहू मेल खाते हैं, इसके वीडियो लगातार सामने आ रहे हैं।

सिनेमाघरों से फैस के वीडियो भी चर्चा में हैं, जिसमें वह भावुक होते और स्क्रीन के सामने हाथ जोड़े नजर आ रहे हैं। हाउसफुल शोज दिखाए जाने से भी दर्शकों के मन में फिल्म को लेकर उत्सुकता है।

फिल्म एक ऐसे सब्जेक्ट पर बनी, जिसमें लोगों की रुचि, लेकिन जानकारी सीमित: ये फिल्म नीम करौली बाबा की ज़िंदगी पर बनी है। उनके भक्त दुनियाभर में हैं। उनके कैची धाम आश्रम में सालाना हजारों लोग पहुंचते हैं। उनकी ज़िंदगी पर अब तक कई बुक लिखी गई हैं और डॉक्यूमेंट्री बनी हैं, हालांकि ज्यादातर इंग्लिश में हैं, जिसे आम जनता कम ही जानती है।

फिल्म की सादगी और फैक्ट्स: फिल्म हनुमान अंश को बेहद सादगी से फैक्टुअल बनाया गया है। फिल्म को पसंद किए जाने का एक कारण ये भी है कि इसे कर्माशंयली नहीं

बनाया गया है। डायरेक्टर ने खुद एक इंटरव्यू में दावा किया है कि इस

फिल्म को जानकारी मात्र के लिए बनाया गया है।

कौन है नीब करौली बाबा

नीब करौली बाबा का असली नाम लक्ष्मीनारायण शर्मा है। उत्तरप्रदेश के अकबरपुर गांव में इनका जन्म 1900 के आसपास हुआ।

11 साल की उम्र में इनकी शादी हुई, 17 साल की उम्र में ज्ञान प्राप्त हुआ।

बाबा दो बेटे और एक बेटी के पिता हैं।

1958 में बाबा ने अपना घर त्याग दिया। वो उत्तर भारत में साधुओं की तरह विचरण करने लगे।

उत्तराखंड के नैनीताल के पास कैची धाम में वो पहली बार 1961 में आए।

11 सितंबर 1963 में बाबा ने वृंदावन में देहत्याग कर दिया।

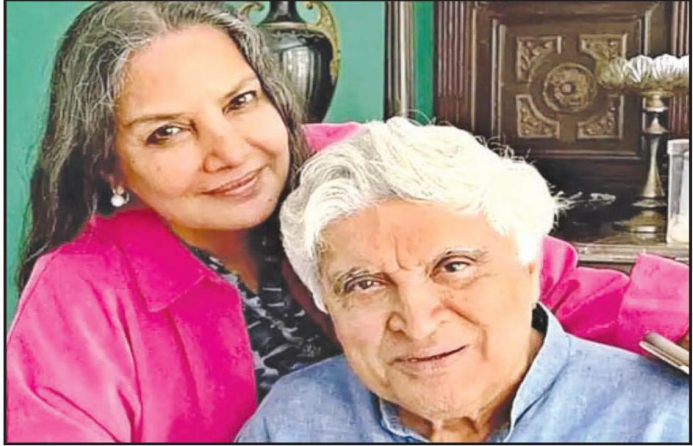
कहा जाता है कि बाबा ने अपने जीवन में करीब 108 हनुमान मंदिर बनवाए।

सोनम वांगचुक ने आमिर को कहा गजनी



सोनम वांगचुक ने आमिर खान के उस बयान पर प्रतिक्रिया दी है, जिसमें उन्होंने कहा था कि 3 इंडियट्स बनाने से पहले वे वांगचुक से कभी नहीं मिले थे। आमिर ने यह भी कहा था कि फिल्म का फुंसुक वांगडू किरदार सोनम वांगचुक से प्रेरित नहीं था। प्रखर गुप्ता के साथ पॉडकास्ट में सोनम वांगचुक ने आमिर के दावे पर बात की। उन्होंने अपनी मुलाकात पर भी बात की है। वांगचुक ने कहा, "उन्होंने (आमिर ने) कहा कि हम कभी नहीं मिले। इसके बाद कुछ वीडियो सामने आए, जिनमें वे अपनी गजनी वाली वेशभूषा में मेरा भाषण देख रहे थे।" उन्होंने आगे कहा, "चूंकि वे गजनी के रूप में थे, शायद उनकी कुछ समय के लिए याददाश्त चली गई होगी। उन्हें वो 15 मिनट बाद सब भूल गए होंगे। मुझे इस पर हैरानी नहीं है। हमारी विस्तार से मुलाकात हुई थी।" आखिर में सोनम वांगचुक ने आमिर पर तंज कसते हुए कहा, "हमने सुना है कि वे अपने किरदारों में बहुत गहराई से उतर जाते हैं। शायद वे गजनी की भूमिका में इतने डूबे थे कि भूल गए कि वे उस पुरस्कार समारोह में आए थे, जहां मुझे सम्मान दिया गया था। हमारी विस्तार से मुलाकात हुई थी और हमने कई विचारों पर चर्चा की थी।" 3 इंडियट्स के किरदार पर कही यह बात सोनम वांगचुक ने बताया है कि उन्हें क्यों लगता है कि उनकी बातचीत से 3 इंडियट्स में आमिर के किरदार के कुछ हिस्से प्रभावित हो सकते हैं।

हम पर फतवा लगाया जाता है, कोई आतंकवादी कहता है



शबाना आजमी ने हालिया इंटरव्यू में कहा है कि उन्हें और जावेद अख्तर को हिंदू और मुस्लिम हर वर्ग से नफरत मिलती है। उन्होंने कहा कि कई बार उन पर फतवे लगाए गए और कई बार उन्हें आतंकवादी तक कहा जाता है। शबाना आजमी ने जूम को दिए इंटरव्यू में कहा है, 'जावेद और मेरे हम दोनों के सिर पर ये श्रेय है कि हमें दोनों इनटोलरेंट कम्युनिटी के जो हिस्से हैं, वो बर्दाश्त नहीं कर पाते। हिंदू कट्टरपंथी और मुस्लिम कट्टरपंथी दोनों। तो फिर हमें लगता है कि हमारी धर्मनिरपेक्ष सोच तो साबित होती है।' आगे शबाना आजमी ने कहा, 'कभी मौलवी हमें फतवा दे रहा है, कभी कोई हमें आतंकवादी कह रहा है। मुझे ये लगता है कि हमें हिंदू-मुस्लिम नेरेटिव से ऊपर उठना होगा। और मुझे लगता है कि सिर्फ एक ही तरीका है, जिससे ये हो सकता है, वो ये कि जब हमें हिंदू- मुस्लिम के झगड़े में धकेला जाए, तो हम इसमें फंसे न। ये लड़ाई हिंदू मुस्लिम की नहीं बल्कि उदार और कट्टर रसोच रखने वाले लोगों की होनी चाहिए। लिबरल हिंदू और लिबरल मुस्लिम को एक साथ होना चाहिए और इनटोलरेंट हिंदू-मुस्लिम को एक साथ होना चाहिए। ऐसे ही हमारे अंदर से धर्म का जहर का निकलेगा।

आसिम रियाज ने भव्या सिंह को भेजा लीगल नोटिस



बिग बॉस 13 फेम आसिम रियाज ने सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर भव्या सिंह को कानूनी नोटिस (सीज एंड डिजिस्ट) भेजा है। भव्या ने एक पॉडकास्ट के दौरान आसिम पर मारपीट करने और दुबई में किसी महिला के पैसों पर निर्भर रहने जैसे गंभीर आरोप लगाए थे। IANS के अनुसार आसिम के वकील ने इन दावों को पूरी तरह झुठ्ठा कि और छवि खराब करने वाला बताया है। नोटिस में भव्या और संबंधित मीडिया प्लेटफॉर्म को 72 घंटे के भीतर विवादित कंटेंट हटाने की हिदायत दी गई है। भव्या सिंह ने लगाए थे गंभीर आरोप एमटीवी सफ्टड्रसविला 12 फेम भव्या सिंह ने हाल ही में एक पॉडकास्ट में आसिम रियाज और उनकी एक्स-गर्लफ्रेंड हिमांशी खुराना के ब्रेकअप पर टिप्पणी की थी। भव्या ने दावा किया था कि उन्हें किसी ने बताया था कि आसिम पागल ईसान हैं और मारपीट करता था। इसके अलावा भव्या ने एक वीडियो होने का दावा भी किया था। पॉडकास्ट में यह भी कहा गया था कि आसिम दुबई

में किसी अज्ञात महिला के पैसों पर रह रहे हैं और उस पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं।

आसिम के वकील ने आरोपों को बताया निराधार

आसिम रियाज की ओर से लीगल फर्म फाल्कन लीगल के पार्टनर एडवोकेट सुहैल शरीफ ने इन आरोपों को सिर से खारिज किया है। कानूनी नोटिस में कहा गया है कि भव्या के बयान आसिम को हिमांशी के खिलाफ शारीरिक हिंसा करने वाले व्यक्ति के रूप में गलत तरीके से पेश करते हैं।

हिमांशी और आसिम 4 साल से रिलेशनशिप में थे।

इन बयानों से आसिम की सामाजिक छवि और प्रोफेशनल करियर को भारी नुकसान पहुंचा है। वकील ने साफ किया कि उनके क्लाइंट अपने बयानों को बर्दाश्त नहीं करेंगे। नोटिस के जरिए भव्या सिंह से कहा गया है कि वे आसिम के खिलाफ अलावा भव्या ने एक वीडियो होने का दावा भी किया था। पॉडकास्ट में यह भी कहा गया था कि आसिम दुबई

पॉडकास्ट या उससे जुड़ी सामग्री को शेयर किया है, उनसे भी उस कंटेंट को 72 घंटे में हटाने के लिए कहा गया है।

हिमांशी खुराना के आरोपों से शुरू हुआ विवाद

हिमांशी का धर्म परिवर्तन कराने के दबाव का आरोप: अभिनेत्री हिमांशी खुराना ने हाल ही में पारस छाबड़ा के पॉडकास्ट में दावा किया कि आसिम रियाज के साथ रिश्ते के दौरान उन पर धर्म बदलने का मानसिक दबाव बनाया गया था। उन्होंने बताया कि उनके पूजा-पाठ करने पर आपत्ति जताई जाती थी और सामने वाले परिवार की तरफ से भी सोच बदलने का दबाव था। हिमांशी के मुताबिक, यह दबाव इतना बढ़ गया था कि वह इस्लाम कबूल करने के बेहद करीब पहुंच गई थीं। उन्होंने धर्म बदलने से पहले आखिरी बार चार धाम की यात्रा करने की इच्छा जताई थी, क्योंकि उन्हें लगता था कि इसके बाद वह अपनी पुरानी मान्यताओं से दोबारा नहीं जुड़ पाएंगी। हिमांशी ने दावा किया कि एक समय वह आसिम के दबाव में इस्लाम कबूल करने के बेहद करीब पहुंच गई थीं।

आसिम रियाज का पलटवार और आरोपों का खंडन: हिमांशी के दावों के बाद आसिम रियाज ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक नोट शेयर कर सभी आरोपों को पूरी तरह गलत बताया। आसिम ने

लिखा कि उन्होंने ज़िंदगी में कभी किसी व्यक्ति से अपना धर्म बदलने के लिए नहीं कहा। आसिम ने यह भी कहा कि उन्होंने हिमांशी को सिर्फ फिटनेस की तरफ पुरा किया था और पर्सनल बातों को पब्लिक में लाकर विवाद पैदा करना बचकाना है। 'बिग बॉस 13' से शुरू हुआ था रिश्ता : आसिम रियाज और हिमांशी खुराना की मुलाकात 2019 में रियलिटी शो 'बिग बॉस 13' के दौरान हुई थी। शो के बाद दोनों लगभग 4 साल तक रिलेशनशिप में रहे। हालाँकि, दिसंबर 2023 में दोनों ने अलग-अलग

पब्लिसिटी पाने और उनके खिलाफ माहौल बनाने के लिए धर्म का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। आसिम ने यह भी कहा कि उन्होंने हिमांशी को सिर्फ फिटनेस की तरफ पुरा किया था और पर्सनल बातों को पब्लिक में लाकर विवाद पैदा करना बचकाना है। 'बिग बॉस 13' से शुरू हुआ था रिश्ता : आसिम रियाज और हिमांशी खुराना की मुलाकात 2019 में रियलिटी शो 'बिग बॉस 13' के दौरान हुई थी। शो के बाद दोनों लगभग 4 साल तक रिलेशनशिप में रहे। हालाँकि, दिसंबर 2023 में दोनों ने अलग-अलग

सामंथा प्रभु ने शेयर की बेबी बंप की तस्वीरें

एक्ट्रेस सामंथा रूथ प्रभु इस वक़्त अपने प्रेग्नेसी ब्रेक पर हैं। वे सोशल मीडिया पर अपने प्रेग्नेसी सफर की तस्वीरें लगातार शेयर कर रही हैं। हाल ही में सामंथा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक नया फोटो डंप शेयर किया है, जिसमें वे अपना बेबी बंप और प्रेग्नेसी ग्लो दिखाती नजर आ रही हैं। इस पोस्ट पर एक फैन ने उन्हें बच्चे के नाम का सुझाव दिया, जिस पर एक्ट्रेस ने मजेदार रिएक्शन दिया है। सामंथा ने 1 दिसंबर 2025 को फिल्ममेकर राज निदिमोर से शादी की थी और जल्द ही वे अपने पहले बच्चे का स्वागत करने वाली हैं।

फैन ने सुझाया सामंथा और राज के नाम का कॉम्बिनेशन

सामंथा की नई इंस्टाग्राम पोस्ट में उनकी अलग-अलग तस्वीरें शामिल हैं। इनमें से कुछ तस्वीरों में वे बिना मेकअप के नजर आ रही हैं, तो कुछ में फ्लाइट और घर पर शीशे के सामने सेल्फी लेते हुए, बेबी बंप दिखा रही हैं। पोस्ट के कमेंट सेक्शन में एक फैन ने लिखा, लड़की के लिए समैरा और लड़के के लिए सम्राज कैसा रहेगा? यह सामंथा और राज के नाम का परफेक्ट मिकस है। इस पर

सामंथा ने जवाब देते हुए लिखा, सम्राज... क्या यह कुछ ज्यादा नहीं हो जाएगा?

सामंथा प्रेग्नेसी में 11 किलो वजन बढ़ा

सामंथा ने जवाब देते हुए लिखा, सम्राज... क्या यह कुछ ज्यादा नहीं हो जाएगा?

सामंथा प्रेग्नेसी में 11 किलो वजन बढ़ा

सामंथा ने जवाब देते हुए लिखा, सम्राज... क्या यह कुछ ज्यादा नहीं हो जाएगा?

इससे पहले इंस्टाग्राम पर आस्क मी एनीथिंग (AMA) सेशन भी रखा था। इसमें उन्होंने बताया था कि वे अपने प्रेग्नेसी फेज को काफी एंजॉय कर रही हैं। एक यूजर के सवाल पर उन्होंने खुलासा किया कि उनका वजन अब तक 11 किलो बढ़ चुका है। सामंथा ने कहा, हमझे लगा था कि इस दौरान मैं काफी परेशान या घबराई हुई रहूंगी, लेकिन इसकी जगह मैं खुद को काफी मजबूत और सशक्त महसूस कर रही हूँ।

राज निदिमोर से 2025 में कोयंबटूर में की थी शादी

सामंथा और फिल्ममेकर राज निदिमोर ने 1 दिसंबर 2025 को तमिलनाडु के कोयंबटूर स्थित ईशा योग केंद्र के लिंग भैरवी मंदिर में शादी की थी। यह एक पारंपरिक समारोह था, जिसमें सिर्फ परिवार के लोग और करीबी दोस्त शामिल हुए थे। दोनों के बीच रिश्ते की खबरें 2023 से आ रही थीं, जब उन्होंने सीरीज 'द फेमिली मैन 2' और 'सिटाडेल: हनी बन्नी' में साथ काम किया था। इससे पहले सामंथा की शादी एक्टर नागा चैतन्य से हुई थी, जिनसे 2021 में उनका तलाक हो गया था।

ग्रैंड कैन्यन में अचानक आई बाढ़, 15 लोग लापता

एजेंसी

कोलोराडो । अमेरिका के ग्रैंड कैन्यन नेशनल पार्क में अचानक आई बाढ़ के बाद करीब 15 लोगों के लापता होने की खबर है। अचानक आई बाढ़ ने ब्राइट एंजेल कैन्यन और फैटम रैच इलाके को प्रभावित किया। नेशनल पार्क सर्विस के अनुसार, बाढ़ अपने साथ बड़े पत्थर, धातु के ढांचे और अन्य मलबा बहाकर कोलोराडो नदी में ले गई। नेशनल पार्क सर्विस ने बताया कि वह प्रभावित इलाके से लोगों को निकालने और वहां मौजूद लोगों का पता लगाने के लिए एरिजोना के अधिकारियों के साथ काम कर रही है। एजेंसी ने लापता लोगों या इलाके में मौजूद पैदल यात्रियों के बारे में किसी भी जानकारी की अपील की है। यूटा स्टेट यूनिवर्सिटी में सेंटर फॉर कोलोराडो रिवर स्टडीज के निदेशक जैक शिम्ट ने कहा, यह याद दिलाता है कि ग्रैंड कैन्यन कितना गतिशील और



अमेरिका के ग्रैंड कैन्यन में बाढ़ का कहर

सक्रिय भू-दृश्य है। उन्होंने बताया कि समूह को हेलीकॉप्टर से सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया। इस वजह से उनका अभियान तय समय से दो दिन पहले ही खत्म हो गया। प्लैगस्टाफ में राष्ट्रीय मौसम सेवा के मौसम विज्ञानी जस्टिन जॉन्डो के

अनुसार, चट्टानी इलाके में करीब 30 मिनट के भीतर आधा इंच से एक इंच तक बारिश हुई। इस इलाके में जमीन काफी ऊंचाई से नीचे की ओर जाती है। जॉन्डो ने कहा, इसका ज्यादातर पानी तुरंत बह गया। उन्होंने बताया कि बाढ़ ग्रैंड

कैन्यन के उत्तरी हिस्से में आई, जहां ब्राइट एंजेल क्रीक नॉर्थ रिम से नीचे उतरकर कोलोराडो नदी में मिलती है। इस दौरान करीब 6,000 फीट यानी 1,828 मीटर की ऊंचाई का अंतर आता है। एजेंसी ने चेतावनी दी है कि सोमवार तक और गरज के

नेपाल में विनाशकारी बाढ़ से हुई मौतों पर बांग्लादेश की संसद में जताया गया शोक



एजेंसी

काठमांडू। बांग्लादेश की संसद ने नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ में जान गंवाने वाले लोगों के प्रति गहरा दुख व्यक्त करते हुए सर्वसम्मति से शोक प्रस्ताव पारित किया है। शोक प्रस्ताव में मृतकों के शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त की गई है। प्रस्ताव पर चर्चा के बाद बांग्लादेश की संसद ने इसे सर्वसम्मति से पारित किया। मृतकों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए सांसदों ने सदन में एक मिनट की मौन रखा। इसके बाद दिवंगत आत्माओं की चिर शांति के लिए

प्रार्थना की गई। प्रार्थना का संचालन बांग्लादेश के धार्मिक मामलों के मंत्री काजी शाह मोफज्जल हुसैन ने किया। इस बीच, बांग्लादेश की संसद के स्पीकर हाफिज उद्दीन अहमद ने भी नेपाल में बाढ़ और भूस्खलन के कारण हुई भारी मानवीय क्षति पर गहरा दुख और शोक व्यक्त किया। स्पीकर अहमद ने एक शोक संदेश जारी कर शोक के बाद बांग्लादेश की संसद ने इसे सर्वसम्मति से पारित किया। मृतकों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए सांसदों ने सदन में एक मिनट की मौन रखा। इसके बाद दिवंगत आत्माओं की चिर शांति के लिए

डॉ. भागवत ने कनाडा में कहा- हिन्दू जागता है तो समझो दुनिया जागती है

» भारत की मूल संस्कृति एकता और दुनिया की मदद करना



कहीं से भी भारत से मदद मांगी गई है, उसने कभी मना नहीं किया। यही नहीं भारत ने बिना मांगे भी मदद का हाथ बढ़ाया है। यही हमारी परंपरा है। यही भारत का डीएनए है। इसीलिए आपने यह कहावत सुनी होगी - 'अगर हिन्दू जागते हैं, तो दुनिया जागती है। उन्होंने अपने विचारों से यह भी स्पष्ट किया कैसे भारत की आध्यात्मिक विरासत मानवता और प्रकृति के बीच एकता को बढ़ावा देती है। डॉ. भागवत ने कहा, वे सजीव और निर्जीव दोनों को अपना मानते हैं। उन्हें विविधता

में एकता देखने की सीख दी गई है। इसीलिए भारत में विविधता कभी भी एकता के लिए समस्या नहीं बनती। हमारी परंपरा हमें सिखाती है कि न केवल विविधता में एकता है, बल्कि विविधता खुद एकता का एक रूप है। उन्होंने ने वैश्विक समुदाय से वसुधैव कुटुंबकम की प्राचीन विचारधारा को अपनाते का आह्वान किया। संघ प्रमुख भागवत ने इस पर बल दिया कि असली ज्ञान बाहरी अंतरों से परे जाकर मानवता की छिपी हुई आध्यात्मिक एकता को पहचानने में है।

नेपाल बाढ़: डीएनए सुरक्षित कर कब्रों में किया जा रहा दफन



एजेंसी

काठमांडो । नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ में अब तक 903 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। इस बाढ़ के चलते बड़ी संख्या में लोग बहकर देश के निचले इलाकों में पहुंच गए। नेपाल के चितवन जिले में अधिकारियों ने शवों की पहचान होने से पहले ही उन्हें अस्थायी कब्रों में दफनाना शुरू कर दिया है। इसे लेकर हिंदू अंतिम संस्कार की परंपराओं की अनदेखी किए जाने के आरोप भी लग रहे हैं। दक्षिण-मध्य नेपाल के चितवन जिले में आपदा की भयावहता का अंदाजा करीब 250 शवों के पहचान के इंतजार और उन्हें अस्थायी रूप से दफनाने के लिए जल्दबाजी में खोदे गए गड्ढों से लगाया जा सकता है। बाढ़ के केंद्र से भोटेकोशी नदी में बहकर शव सैकड़ों किलोमीटर दूर चितवन पहुंचे। अधिकारियों के अनुसार, फॉरेंसिक टीमों पर बढ़ते दबाव के बीच शनिवार को करीब 100 शवों को अस्थायी रूप से दफनाया गया। थपा ने कहा कि अधिकारी डीएनए नमूनों को सुरक्षित रख रहे हैं। साथ ही, चेहरे की

पहचान से जुड़े विशेष निशानों की तस्वीरें और पहचान से जुड़ी अन्य जानकारी दर्ज की जा रही है। प्रत्येक शव को एक संदर्भ संख्या दी जा रही है, ताकि बाद में परिवार उसे पहचानकर अपने कब्जे में ले सकें। ज्यादा नमी और तेज गर्मी से शवों के सड़ने की प्रक्रिया भी तेज हो गई। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने चेतावनी दी कि शवों को खुले में छोड़ने से बीमारी फैलने का खतरा बढ़ सकता है। रविवार को इलाके में नए भूस्खलन के कारण काठमांडू और चितवन को जोड़ने वाला मुख्य गजमार्ग बंद हो गया। यह मार्ग एक दिन पहले ही आंशिक रूप से खोला गया था। इसके बंद होने से शवों और राहत सामग्री को ले जाने का

होर्मुज के लराक पर वाशिंगटन की बमबारी



» ईरान का जॉर्डन में अमेरिकी ठिकाने पर हमला

अम्मान/तेहरान/वाशिंगटन । होर्मुज जलडमरूमध्य के दक्षिणी ईरान के लराक द्वीप पर बमबारी के जवाब में ईरान ने जॉर्डन के अमेरिकी सैन्य ठिकाने पर हमला किया है। अमेरिका ने लगभग एक माह बाद ईरान के खिलाफ बड़ा हमला किया। इसके बाद ईरान के कि सेना ने जवाब दिया। हमले में रॉकेट, ड्रोन और मिसाइलों का प्रयोग किया। ताजा सैन्य टकराव से तेल कीमतों में उछाल आने की संभावना है। अल जजीरा और सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका ने रविवार को लराक द्वीप पर हमला किया। इसके जवाब में ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) ने जॉर्डन में किंग हुसैन और अल-अजराक में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया। आईआरजीसी ने हमले में मिसाइल और ड्रोन का इस्तेमाल किया। जुलाई के आखिर के बाद से दोनों पक्षों के बीच हिंसा में यह तेजी पहली बार आई है। आईआरजीसी ने कहा कि इन हमलों ने रक्तकनीकी और मरम्मत के बुनियादी ढांचे के साथ-साथ दुश्मन के लड़ाकू विमानों की तैनाती वाली जगहों को भी नष्ट कर दिया गया। आईआरजीसी की हमले की घोषणा के तुरंत बाद जॉर्डन ने आठ मिसाइलों को रोकने (इंटरसेप्ट करने) की सूचना दी। जॉर्डन की सेना ने एक बयान में कहा, रण्यार डिफेंस सिस्टम ने उन आठ मिसाइलों को रोका जो आज, सोमवार तड़के किंगडम के हवाई

क्षेत्र में घुस गई थीं। इस दौरान किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। एक अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि वाशिंगटन के हमलों ने लराक पर उन लॉन्चरों की निशाना बनाया जो होर्मुज जलडमरूमध्य की ओर बारूदी सुरंगों वाले क्षेत्र में रॉकेट दागने के लिए तैयार थे। ईरान की फ़ार्स समाचार एजेंसी ने कहा कि अमेरिकी हमले में कई सैनिक मारे गए और घायल हुए। हाल के हफ्तों में वाशिंगटन होर्मुज पर नियंत्रण का दावा कर रहा है और कह रहा है कि तेहरान की नाकाबंदी के बावजूद अमेरिकी सैन्य सुरक्षा के तहत लाखों बैरल तेल इस जलमार्ग से गुजरता। ईरान का कहना है कि जलमार्ग बंद है। ट्रंप प्रशासन ने कहा है कि अमेरिकी मध्य कमान (सेंटकॉम) ने पिछले हफ्ते जलमार्ग के इंटरनेशनल शिपिंग रूट से समुद्री बारूदी सुरंगों को हटाने का काम पूरा कर लिया है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कह चुके हैं कि अब अगर कोई जहाज या नाव नई बारूदी सुरंगों बिछाती है तो उसे तुरंत नष्ट कर दिया जाएगा। अमेरिकी अधिकारी ने कहा, रअमेरिकी सेना इस इलाके पर बारूकी से नजर रख रही है और इस जरूरी जलमार्ग से व्यापार के निर्बाध प्रवाह की सुरक्षा के लिए तैयार है। ये हमले ऐसे समय में हुए हैं जब ईरान और ओमान इस जलडमरूमध्य से समुद्री यातायात बहाल करने के लिए एक प्रस्तावित व्यवस्था पर बातचीत कर रहे हैं। कतर सहित क्षेत्रीय मध्यस्थों ने इन वार्ताओं का समर्थन किया है। ईरानी अधिकारियों ने बार-बार इस जलडमरूमध्य से नैविगेशन के भविष्य को वाशिंगटन के साथ व्यापक चर्चाओं और क्षेत्रीय सुरक्षा घटनाक्रमों से जोड़ा है।

मोजतबा ने किया इस्लामी एकता का आह्वान

अमेरिका ने ईरान के लराक द्वीप पर दगो रॉकेट



एजेंसी

नई दिल्ली। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला मोजतबा खामेनेई ने इस्लामी देशों के शासकों से कहा कि वे 'अपने असली दुश्मन को पहचानें, उसकी योजनाओं को समझें और उसका सामना करें'। सरकारी समाचार एजेंसी आईआरएनए ने यह जानकारी दी। छह महीने पहले अमेरिका और इस्राइल ने ईरान पर हमला किया था। इस हमले में खामेनेई के पिता और ईरान के कई दूसरे वरिष्ठ नेता मारे गए थे। इसके बाद भी खामेनेई को सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया है। उन्होंने यह बात तेहरान में हुए एक सम्मेलन में शामिल धार्मिक नेताओं को लिखे पत्र में कही। युद्ध के बाद इस्लामी देशों के बीच

मतभेद सामने आए हैं। ईरान ने पड़ोसी खाड़ी अरब देशों में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया। उसने होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजमाही भी सीमित कर दी। तेहरान क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य मौजूदगी का विरोध करता रहा है। यायर नेतन्याहू 2023 में मियामी चले गए थे। गाजा, लेबनान और

नेतन्याहू के बेटे को अमेरिका से क्यों निकाला गया?

इस्राइल की सुरक्षा एजेंसी शिन बेट ने कहा कि उसने प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू के सबसे बड़े बेटे को अमेरिका से तुरंत बाहर निकाला। उन्हें धमकी मिली थी। शिन बेट ने रविवार को जारी एक छोटे बयान में इसकी पुष्टि की। उसने कहा कि यायर नेतन्याहू की 'गंभीर धमकी' मिली थी। एजेंसी ने इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी। हालांकि, प्रधानमंत्री ने फ़िफ्टेन हफ्ते एक इस्राइली टेलीविजन चैनल से कहा था कि ईरान ने उनके एक बेटे को मारने की कोशिश की थी। उनके कार्यालय ने रविवार को इस पर कोई टिप्पणी नहीं की।

होर्मुज जलडमरूमध्य में तेल टैंकर को निशाना बनाया गया

ब्रिटिश सेना की ओर से संचालित एक निगरानी एजेंसी ने बताया कि शनिवार को होर्मुज जलडमरूमध्य में ओमान के खासाब के उत्तर में एक अज्ञात वस्तु ने तेल टैंकर जहाज को निशाना बनाया। ब्रिटेन के समुद्री व्यापार संगठन ने कहा कि जहाज अंदर की ओर जा रहा था। किसी के हावाहट होने या पर्यावरण को नुकसान पहुंचने की सूचना नहीं मिली है। संगठन ने कुछ सैन्य अधिकारियों के हवाले से यह जानकारी दी। इस हमले की पुष्टि किसी ने जिम्मेदारी नहीं ली।

मध्य हिस्से में शनिवार को बस्ती बसाने वालों (शेटलर्स) ने पत्रकारों की एक टीम पर हमला किया। उस समय यह टीम एक फलस्तीनी महिला का इंटरव्यू कर रही थी। महिला ने कहा था कि उसे अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था।

अमेरिका में खुद फ्लेक्स उगाकर कपड़े बना रहीं ईव ओग्डेन शब



एजेंसी

वाशिंगटन। बाजार आज जहां ऐसे परिधानों से पटा पड़ा है जिसमें सिंथेटिक कपड़ों का इस्तेमाल किया जाता है, वहीं अमेरिका के वरमोट में रहने वाली ईव ओग्डेन शब फास्ट फैशन से दूरी बनाने की अनूठी पहल कर रही हैं। अपने घर के पीछे बगीचे में खुद फ्लेक्स उगाती है, जिसका इस्तेमाल लिनन बनाने में होता है। फसल तैयार होने के बाद वह इसका सूत निकालती हैं और उससे अपने परिधान तैयार करती हैं। शब का कहना है कि वह चाहती थी कि लोग स्लो फैशन के बारे में जाने-समझें। प्राकृतिक तरीके से कपड़े तैयार करने का उनका यह प्रोजेक्ट अप्रैल 2025 में शुरू हुआ था। ईव ने अपने 600 वर्ग फीट के सब्जी के बगीचे को फ्लेक्स या अलसी

को खेती के लिए तैयार किया। पहली फसल के बाद, उन्होंने फिर बुआई की। पूरी प्रक्रिया वह अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के जरिए दुनिया के साथ साझा कर रही हैं। यह देखकर लोगों को पारंपरिक और पुराने तरीके याद आ जाते हैं जो आधुनिक मशीनी युग में लगभग गायब हो चुके हैं। शब कहती हैं कि बाजार के चमकदार कपड़े अब उन्हें आकर्षित नहीं

करते। उन्हें अपने पुराने कपड़ों की कद्र करना और उन्हें रफू करके पहनना ज्यादा बेहतर लगता है। दुर्भाग्य से हम सब आज ज्यादातर समय प्लास्टिक के थैले पहनकर घूम रहे हैं और हमें इसका अहसास तक नहीं है। क्या वास्तव में हमें ऐसे कपड़ों की जरूरत है जो पर्यावरण को तबाह कर रहे हैं? -ईव ओग्डेन शबकाफी जटिल है।